व्यंग्य

नौकरी करनी है तो जी हुजूरी करना ही होगा

- रविशंकर श्रीवास्तव

जयपुर के एक सरकारी नौकर को क्या पता था कि वे नौकरी करते हुए अपनी आंखों देखी – कानों सुनी भ्रष्टाचार की भुगती हुई कहानियों को अपनी पुस्तक "नौकरी करनी है तो भ्रष्टाचार करना ही होगा" में प्रकाशित करवाएंगे तो यह प्रयास उनके अपने लिए ही नुकसान देह और खासा तकलीफ दायक होगा. उन्हें उनकी इस गुस्ताख पुस्तक के कारण नौकरी से निलंबन तक भुगतना पड़ा.

दर – असल उन्होंने काल्पनिक नामों और प्राचीन काल का उल्लेख करते हुए भ्रष्टाचार की काल्पनिक घटनाओं का अपनी पुस्तक में उल्लेख किया था, जिसमें यह बताया गया था कि किस प्रकार संस्था में भ्रष्टाचार करने हेतु आला अफसरों द्वारा अपने मातहतों को झूठ बोलने और भ्रष्टाचार करने हेतु दबाव डाला जाता है. भ्रष्टाचार की ये कहानियॉ बहुतों को, खासकर उनके आला अफसरों को वर्तमान समय का और, जाहिर है नागवार लगा. नतीजतन लेखक को विभागीय जांच और निलंबन का दंड भुगतना पड़ा.

दर - असल उस नसीब के मारे ने बहुत वड़ी गलती कर डाली. उसे तो यह पुस्तक लिखनी ही नहीं चाहिए थी. अगर उसे पुस्तक लिखनी ही थी तो वह कोई अन्य

विषय चुनता. उसके आस-पास तमाम अन्य विषय भी थे. उदाहरण के लिए - "नौकरी करनी है तो भ्रष्टाचार करना ही होगा" के बदले वह कोई ऐसी पुस्तक लिखता- "नौकरी करनी है तो जी हुजूरी करना ही होगा" जिसमें जी हुजूरी के फायदे गिनाए गए होते. निश्चित रूप से यह पुस्तक उसके लिए फायदेमंद होता. हो सकता है इस पुस्तक के लिए उसे कोई पुरस्कार भी मिल जाता. उसके आला अफसर उसको पदोन्नति भी देते और वह आने वाले समय के लिए उदाहरण बन जाता. सर्कुलर्स एवं कार्यालयीन आदेशों में उस पुस्तक को रेफर करने के लिए अक्सर टीप दिए जाते.

वह कोई पुस्तक लिखता – "नौकरी करनी है तो चाय-काफी के साथ गपशप करनी ही होगी" जिसमें काम के बदले चाय-काफी के साथ गपशप करने के फायदे गिनाए गए होते तो उसके संगी-साथी कर्मचारी बंधु उसे हाथों हाथ लेते और उसे अपना हीरो मान लेते. कर्मचारी संगठनों के लोग उसे जगह-जगह सेमिनार हेतु आमंत्रित करते और शीघ्र ही वह एक सफलतम आधुनिक गुरू बन जाता.

अगर वह इस प्रकार की पुस्तकें लिखता- "सरकारी नौकरी कैसे प्राप्त करें-संदर्भः पंजाब पीएससी स्कैम" तो उसकी यह पुस्तक न सिर्फ गर्मा-गर्म भजिए की तरह हाथों हाथ बिकती ऊपर से वह आज के आधुनिक बेरोजगारों का मसीहा बन जाता. आखिर बेचारे बहुतों की गलत धारणा साफ हो जाती, जो सिर्फ यह समझते हैं कि सरकारी

नौकरियॉं सिर्फ मेहनत कर प्रवीणता में आने से ही मिलती हैं, और तब वे अपने पालकों को उस पुस्तक का उदाहरण देकर तब यह आसानी से समझा सकते कि पढ़ाई में मेहनत करने का कोई फायदा नहीं. उसकी यह पुस्तक बिक्री का एक नया रेकार्ड बना देती और उसे सबसे धनवान व्यक्ति.

अगर वह पुस्तक लिखता - "नौकरी करनी है तो काम टालना और उलझाना ही होगा" जिसमें काम टालने और उलझाने के व्यक्तिगत फायदे गिनाए गए होते तो नए सरकारी नौकर जो देश प्रेम और कुछ कर गुजरने की गलत तमन्ना लिए संस्था में दाखिल होते हैं, उनके लिए यह महान उपयोगी होता, क्योंकि इस पुस्तक से नौकरी करने के सच्चे गुर उन्हें तत्काल उपलब्ध हो जाते.

बहरहाल, गलती उस भले आदमी से हो चुकी है, उम्मीद करते हैं कि ऐसी अहमकाना गलती आगे कोई न करे और प्रार्थना करते हैं कि उसकी गलती माफ हो.

raviratlami@mantrafreenet.com

रविशंकर श्रीवास्तव
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,

रतलाम म.प्र. 457001